सभी प्रकार की सरकारी सहायताओं से मुक्त, खोजी पत्रकारिता का तेज बढ़ता अखबार

दैनिक

themovementofindia.in

# द मूवमेंट ऑफ़ इंडिया

RNI No. RAJHIN/2012/48876
पोस्टल पंजीयन नं. भीलवाड़ा / 2025-2027

खोजी खबरें-तेज नजरें

प्रेरणा स्रोत - स्व. चुन्नीलाल सालवी

ये अखबार ही नहीं क्रांति का अभियान है। मानवता एवं लोकतंत्र का सजग प्रहरी, ये दुष्टों की मौत का सामान है।

वर्ष - 14 अंक -27 | 21 जुलाई 2025,सोमवार | संपादक - दयाराम दिव्य | सहसंपादक - चाहत सालवी | मूल्य - 2 रू.

## भीलवाड़ा में देर रात माहौल गरमाया, 3 डिटेन:तीन घंटे तक किया प्रदर्शन; दोषियों पर कार्रवाई के आश्वासन के बाद माने

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा के पुर थाना इलाके में एक धर्मस्थल पर कचरा फैलाने के आरोपों के बाद माहौल गरमा गया। रविवार रात लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। सूचना इस पर पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और समझाया। तीन घंटे लोगों ने धरना दिया और आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग की। तीन घंटे तक प्रदर्शन चला। लोग आश्वासन के बाद माने। मामले में 3 संदिग्ध को डिटेन किया गया है। दरअसल रविवार रात पुर थाना इलाके के एक धर्मस्थल पर अज्ञात व्यक्ति ने कचरा फैला दिया। इसका पता चला तो लोग जुट गए। दोषियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर धर्मस्थल के बाहर धरने पर बैठ गए। लोग प्रदर्शन करने लगे।

कुछ संगठनों के पदाधिकारियों-कार्यकर्ता पहुंच गए और रोष जताया। पुलिस प्रशासन को सूचना देकर दोषियों को तुरंत गिरफ्तारी की मांग की।

सूचना मिलने पर पुर सीआई पुष्पा कासोटिया मय जाप्ता मौके पर पहुंचीं और माहौल को शांत करने का प्रयास किया। करीब तीन घंटे चला प्रदर्शन दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का विश्वास दिलाने पर समाप्त कर दिया गया।पुलिस ने इस मामले में शामिल तीन लोगों को हिरासत में लिया है इनसे डिटेल इन्वेस्टिगेशन किया जा रहा है।

## भीलवाड़ा में अवैध बजरी खनन पर बड़ी कार्रवाई:बनास नदी से 16 ट्रैक्टर ट्रॉली, 3 जेसीबी और एक लोडर जप्त,14 गिरफ्तार

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा में अवैध बजरी खनन और परिवहन के खिलाफ लगातार कार्रवाई की जा रही है इसी के तहत कारोई थाना पुलिस ओर डीएसटी ने एक बड़ी कार्रवाई का अंजाम देते हुए 16 ट्रैक्टर ट्राली, तीन जेसीबी और एक लीडर को जप्त करते हुए बजरी खनन में शामिल 14 लोगों को गिरफ्तार किया है। एसपी धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि डीएसटी को सूचना मिली थी की दौलतपुर एवं तागारिया के पास बनास नदी में बड़ी मात्रा में अवैध बजरी का खनन और परिवहन किया जा रहा है, मौके पर बड़ी संख्या में ट्रैक्टर ट्रालियां और जेसीबी से अवैध बजरी भरी जा रही है। इस पर कारोई थाना प्रभारी मय जाप्ता और डीएसटी ने जॉइंट कार्रवाई को अंजाम देकर अवैध बजरी खनन और परिवहन में शामिल 16 ट्रैक्टर ट्राली, तीन जेसीबीऔर एक लोडर को जप्त किया है।पुलिस ने अवैध बजरी का खनन में शामिल 14 लोगों को मौके से गिरफ्तार किया और इनके खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

## जयपुर में धमाके के साथ बेसमेंट में घुसी थार, सड़क पर मची चीख-पुकार, ड्राइवर फरार

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

जयपुर शहर में शनिवार रात एक बड़ा सड़क हादसा हो गया। शिप्रापथ थाना क्षेत्र स्थित विजय पथ चौराहे पर तेज रफ्तार थार जीप ने पहले एक स्विफ्ट कार को जबरदस्त टक्कर मारी और फिर बेकाबू होकर एक दुकान के बेसमेंट में जा घुसी। हादसा इतना भीषण था कि मौके पर अफरा-तफरी मच गई। गनीमत रही कि कार के एयरबैग खुल गए, जिससे कार सवार युवक की जान बाल-बाल बच गई। वहीं, हादसे के बाद थार का ड्राइवर गाड़ी छोड़कर मौके से फरार हो गया। फिलहाल पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हादसा शनिवार देर रात करीब 11:45 बजे हुआ। शिप्रापथ की ओर से आ रही एक सफेद रंग की स्विफ्ट कार मध्यम मार्ग की तरफ जा रही थी। इसी दौरान सामने से तेज रफ्तार में आ रही थार जीप ने कार को सीधी टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि थार बेकाबू होकर पास की दुकान के बेसमेंट में जा घुसी। हादसे की आवाज सुनकर आसपास के लोग तुरंत मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। स्विफ्ट कार में सवार युवक गोकुल निवासी निवाई, टोंक बताया जा रहा है। टक्कर के दौरान कार के एयरबैग खुलने से उसकी जान बच गई, हालांकि वह बुरी तरह से घबरा गया था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हादसे के तुरंत बाद थार जीप का ड्राइवर मौके से फरार हो गया। उसने न तो किसी की मदद ली और न ही किसी को हादसे की जानकारी दी। शिप्रापथ थाना पुलिस को जैसे ही हादसे की जानकारी मिली, तुरंत टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने क्रेन की मदद से बेसमेंट में फंसी क्षतिग्रस्त थार को बाहर निकलवाया और उसे जब्त कर थाने भिजवा दिया। पुलिस ने बताया कि हादसे के बाद कार मालिक की ओर से शिकायत दर्ज कराई गई है, जिस पर FIR दर्ज कर ली गई है। जयपुर शहर में बीते कुछ महीनों से ओवरस्पीड वाहनों के कारण सड़क हादसों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। खासकर रात के समय तेज रफ्तार में वाहन चलाने वाले कई बार जानलेवा घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। पुलिस ने पहले भी कई बार ऐसे ड्राइवर्स के खिलाफ कार्रवाई की है, लेकिन जागरूकता की कमी और ट्रैफिक नियमों की अनदेखी लगातार हादसों को न्योता दे रही है।

फिलहाल शिप्रापथ थाना पुलिस आरोपी की तलाश में जुटी है और वाहन से जुड़े दस्तावेजों की जांच कर रही है। जल्द ही आरोपी ड्राइवर को पकड़ने का दावा भी किया जा रहा है। वहीं, कार सवार युवक की हालत खतरे से बाहर है, लेकिन वह अभी भी हादसे के सदमे में है।

## 6 फरार आरोपियों पर 10 हजार का इनाम घोषित:ऑनलाइन सट्टे में शामिल सटोरियों को पकड़ने के लिए भीलवाड़ा पुलिस का एक्शन

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा में ऑनलाइन जुआ-सट्टा पर की गई कार्रवाई के बाद सट?टा चलाने वाले फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने सख्त कदम उठाए हैं। फरार चल रहे छह वांछित आरोपियों पर 10-10 हजार रुपए का इनाम घोषित किया है।

**10 हजार का इनाम घोषित**

मामला भीलवाड़ा के सदर थाना क्षेत्र में ऑनलाइन जुआ-सट्टा पर गत दिनों हुई कार्रवाई से जुड़ा है। कार्रवाई के बाद से ये सभी आरोपी लगातार फरार चल रहे हैं । इनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने सख्त कदम उठाते हुए इन सभी 6 आरोपियों पर 10- 10 हजार का इनाम घोषित किया है।

**इनकी होनी है गिरफ्तारी**

एसपी धर्मेंद्र सिंह ने बताया की फरार आरोपियों में प्रतापनगर थाना क्षेत्र के डालचंद जाट, प्रकाश सिंधी, कोतवाली थाने के कमल कुमार मंघानी,फजले रऊफ उर्फ लुत्फी, भीमगंज थाना क्षेत्र के अर्पित और राहुल गुर्जर शामिल हैं। इन सभी के खिलाफ 19 जून 2025 को सदर थाने में ऑनलाइन सट्टे को लेकर जुआ एक्ट और आईटी एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत दो एफआईआर दर्ज की गई थी।

इन आरोपियों की गिरफ्तारी में मदद करने वाले को इनाम दिया जाएगा।

वहीं सूचना देने वाले का नाम गोपनीय रखा जाएगा। एसपी धर्मेंद्र सिंह ने जिला कार्यप्रणाली शाखा को इन आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए प्रभावी कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

C M Y K

## सम्पादकीय

### विश्व के लिए खतरनाक होगा टैरिफ का दांव

शातिर गजनवी की मशहूर गजल का मतला है-गो जरा सी बात पर बरसों के याराने गए। पुतिन और ट्रंप के बीच हाल में कुछ ऐसा ही हुआ है। हां, बात केवल इतनी ही नहीं है। 2013 की मिस यूनिवर्स सौंदर्य प्रतिस्पर्धा को लेकर मास्को गए ट्रंप ने रूसी अरबपतियों और राष्ट्रपति पुतिन की खातिरदारी से अभिभूत होकर कहा था कि वे राष्ट्रपति ओबामा से भी अधिक प्रभावशाली हो चुके हैं। पुतिन का रंग उन पर इतना गहरा चढ़ा कि राष्ट्रपति बनने के बाद 2018 के हेलसिंकी शिखर सम्मेलन में उन्होंने अपने खुफिया तंत्र के खिलाफ पुतिन का पक्ष लेते हुए यह मानने से इन्कार कर दिया कि रूस ने अमेरिकी चुनाव में गड़बड़ी कराई थी। पुतिन के साथ अपने खास रिश्ते का दम भरते हुए उन्होंने कहा कि वे राष्ट्रपति बनने के 24 घंटों के भीतर युद्धविराम करा देंगे। जब वह नहीं हुआ तो उन्होंने रूस के प्रतिबंध हटाने और क्रीमिया को रूस के भाग के रूप में मान्यता देने जैसे प्रलोभन देकर पुतिन को मनाने की कोशिशें कीं। जंग का ठीकरा जेलेंस्की के सिर फोड़ा, उन्हें तानाशाह बताते हुए व्हाइट हाउस में मीडिया के सामने बुरा-भला कहा। उन्होंने यूक्रेन की सैन्य और आर्थिक मदद रोक ली और बिना शर्त बातचीत के लिए राजी किया। युद्ध विराम के लिए ट्रंप ने पुतिन के साथ छह बार फोन-वार्ताएं कीं, परंतु पुतिन न केवल बात लटकाते रहे, बल्कि हर बातचीत के बाद बड़े-बड़े हमले करते रहे। इस महीने की बातचीत के बाद ट्रंप का पुतिन से मोहभंग हो गया और उन्होंने कहना शुरू किया कि वे उनसे नाखुश हैं। बीबीसी को दिए इंटरव्यू में ट्रंप ने कहा कि वे पुतिन से निराश हैं, पर हताश नहीं।

**प्रधान संपादक - दयाराम दिव्य**

# शिक्षा के साथ संस्कार जरूरी - एडवोकेट रंजीत दिवाकर शिक्षक - अभिभावक संवाद का टैगोर पब्लिक स्कूल में हुआ आयोजन

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

**राजकुमार सैन**

धौलपुर में वर्तमान समय में शिक्षा के साथ छात्रों में संस्कार के भाव पैदा करना समय की मांग है ,

टैगोर पब्लिक सेकेंडरी स्कूल में किए गए शिक्षक अभिभावक संवाद कार्यक्रम के अंतर्गत उपस्थित अभिभावकों को संबोधित करते हुए एडवोकेट रंजीत दिवाकर ने कहा कि हम बच्चों की शिक्षा पर फोकस करते हैं जबकि शिक्षा के साथ बच्चों में संस्कार का भाव पैदा करना आवश्यक है। दिवाकर ने कहा कि बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ से बढ़कर हमें बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ के साथ बेटों को संस्कारवान बनाने की आवश्यकता है।उन्होंने कहा कि टैगोर पब्लिक स्कूल का शैक्षणिक वातावरण परिस्थितियों के अनुकूल है। विद्यालय 35 वर्षों से शहर में शिक्षा के क्षेत्र में नवीन आयाम स्थापित कर रहा है। इस अवसर पर अनेक अभिभावकों ने विद्यालय की शैक्षणिक शैली की प्रशंसा की और कहा कि विद्यालय दूसरी पीढ़ी को शिक्षा देने का कार्य कर रहा है। इस अवसर पर सैकड़ो विद्यार्थी व उनके परिवरीजन उपस्थित रहे।

# शिवभक्ति की गूंज से गुंजायमान हुआ संपूर्ण शहर, हजारों श्रद्धालुओं ने लिया भाग !

**भीलवाड़ा।** श्रावण मास की पुण्य तिथि पर पूर्वांचल जनचेतना सेवा समिति, भीलवाड़ा के तत्वावधान में निंबार्क आश्रम, गांधीनगर से हरणी महादेव मंदिर तक निकाली गई विशाल, भव्य एवं दिव्य कांवड़ यात्रा सम्पूर्ण सफलता एवं भक्तिभाव के साथ सम्पन्न हुई।

यह पावन यात्रा पूज्य महंत श्री 108 मोहन शरण जी महाराज के पावन सान्निध्य एवं आशीर्वाद में निंबार्क आश्रम से प्रारंभ हुई। यात्रा के आरंभ में महंत मोहन शरण जी, महंत बनवारी शरण काठिया बाबा, महंत बाबुगिरी,जिलाध्यक्ष पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह, प्रतापनगर थानाधिकारी सुरजीत ठोलिया, ट्रैफिक थाना प्रभारी बाबूलाल टेपन, पार्षद ओम साईं राम, महापौर राकेश पाठक, पूर्व राज्यमंत्री धीरज गुर्जर, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा, भाजपा नेता आजाद शर्मा, पूर्व सभापति ओम प्रकाश नारानीवाल, कांग्रेस जिलाध्यक्ष अक्षय त्रिपाठी, सेवादल योगेश सोनी, विधायक कार्यालय प्रभारी बाबूलाल टाक सहित संत-महात्माओं, समाजसेवियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने कांवड़ यात्रियों को झंडी दिखाकर रवाना किया। हजारों श्रद्धालुओं ने पूरे उत्साह, अनुशासन और शिवभक्ति के साथ इस पवित्र यात्रा में भाग लिया। यात्रा मार्ग शिव नाम के जयघोष, ढ़ोल-नगाड़ों की गूंज, भजनों की दिव्यता और श्रद्धालुओं की आस्था से सराबोर रहा। पूरा शहर ÷बोल बम÷ के नारों से गूंज उठा और श्रद्धा का अद्भुत वातावरण बना।

हरणी महादेव मंदिर में विधिवत पूजा-अर्चना, शिव आरती और प्रसादी वितरण के साथ यात्रा का समापन हुआ। वहां हजारों शिवभक्तों ने दर्शन लाभ लिया।मीडिया प्रभारी विक्रम झा ने बताया कि यात्रा के दौरान पेयजल, प्राथमिक चिकित्सा, भजन मंडलियां, सुरक्षा, प्रसादी सहित सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुचारू रूप से उपलब्ध कराई गई। नगर प्रशासन और स्वयंसेवकों का सहयोग भी सराहनीय रहा।

समिति अध्यक्ष श्री अरुण राय ने यात्रा की सफलता पर सभी श्रद्धालुओं, सहयोगी संस्थाओं, प्रशासन, पत्रकार गण, भजन मंडलियों और स्वयंसेवकों के प्रति आभार व्यक्त किया। निम्बार्क पारमार्थिक सेवा ट्रस्ट, पंचवटी विकास समिति, निम्बार्क सेवा समिति व कई विभिन्न संगठनों, समाजसेवीयो द्वारा कावड़ यात्रा का स्वागत किया गया। उन्होंने इसे ÷आस्था, ऊर्जा और एकता का अद्वितीय संगम÷ बताया।

इस सफल आयोजन में समिति संरक्षक डॉ. अशोक सिंह, सचिव ओमप्रकाश सिंह, कोषाध्यक्ष श्री कृष्णा महतो, शक्ति नाथ ठाकुर, जगन्नाथ झा, रोशन सिंह, श्री सुरेश चन्द्रबंशी, हंसराज यादव, सहित बड़ी संख्या में समिति पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

# खजीना विद्यालय एवं गौशाला में पौधारोपण किया गया

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

**आकोला (रमेश चन्द्र डाड)**

हरियाळो राजस्थान अभियान के अंतर्गत खजीना नंदी गोशाला में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गोपाललाल खंडेलवाल विधायक रहे, जिनकी गरिमामयी उपस्थिति से आयोजन को विशेष प्रेरणा मिली। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधियों, गौशाला समिति के सदस्यों, पशुपालन विभाग के अधिकारियों, स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं एवं ग्रामीणजनों की सक्रिय भागीदारी रही।

पौधारोपण के अंतर्गत विभिन्न प्रजातियों के 100 छायादार, फलदार एवं औषधीय पौधे लगाए गए। इस पहल का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण, गौशाला परिसर की हरियाली बढ़ाना एवं पशुओं के लिए छायादार वातावरण तैयार करना रहा।

विधायक ने अपने उद्बोधन में वृक्षारोपण को भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक आवश्यक निवेश बताया तथा सभी नागरिकों से आग्रह किया कि वे अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनकी देखभाल करें।

कार्यक्रम का संचालन सराहनीय रूप से संपन्न हुआ तथा सभी सहभागियों ने ÷हरियाळो राजस्थान÷ अभियान को सफल बनाने का संकल्प लिया।

खजीना गांव में श्री देव गौ नन्दी शाला समिति में मांडलगढ़ विधायक गोपाल खंडेलवाल ने पौधारोपण किया, वही इस दौरान विधायक खंडेलवाल ने गौशाला में टीन शेड के लिए 10 लाख की घोषणा की। गौ नन्दी शाला समिति के सदस्यों ने बताया कि शनिवार को मांडलगढ़ विधायक गोपाल खंडेलवाल ने गौशाला में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में पहुंचकर पौधारोपण किया, गौशाला में नीम, जामुन, कदम, अशोक, बादाम, सिसम आदि के 101 पौधे लगाकर समिति के सदस्यों ने देखभाल की जिम्मेदारी ली । इस दौरान नंदराय मंडल अध्यक्ष प्रकाश सांगावत, आकोला डॉ अनिमेष जांगिड़, आकोला प्रशासक शिवलाल जाट, बड़ला प्रशासक शिवराज जाट, प्रधानाचार्य भवानी शंकर शर्मा, अध्यापकगण - भगवती लाल शर्मा, अमर सिंह चौधरी, अनिता बाहेती, नलिनी भारद्वाज शंकर लाल कुम्हार, प्रेम चन्द शर्मा, हरि लाल जोशी, लोकेश जाट, सेवानिवृत अध्यापक श्री रामचंद्र जाट, एवं सांवरमल जाट, गोपाललाल जाट, पूर्व जिला परिषद सदस्य रामेश्वर लाल जाट, अम्बालाल जाट, शिवराज जाट, शंकर सुथार, शंकरलाल जाट आदि कई मौजूद रहे ।।

# हर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी चंवरा के बालाजी से बगीची के बालाजी शिवालय पहुंची कावड़ यात्रा

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

**आकोला (रमेश चंद्र डाड)**

**बड़लियास**

सखी मित्र मंडल ग्रुप द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी चंवरा के बालाजी से बगीची के बालाजी शिवालय पहुंची कावड़ यात्रा कावड़ यात्रा चंवरा के बालाजी से 9ः15 बजे महा आरती के तत्पश्चात प्रसादी वितरित की गई इसी दौरान 400 कावड़िया ने कावड़ भरकर बगीची के बालाजी शिवालय मंदिर के लिए रवाना हुई इस दौरान गांव में जगह-जगह पुष्प वर्षा है अल्फार की व्यवस्था की गई और सभी श्रद्धालु गांव के मुख्य मार्गो से भगवान के भजन कीर्तन करते हुए डीजे ढोल नगाड़े के साथ बगीची के बालाजी मंदिर पहुंचे और बम बम भोले नाथ के नाम से मंदिर गुंज उठा वह शेष जलधारा अभिषेक किया गया

# कावड़ यात्रा का स्वागत

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

**आकोला ( रमेश चंद्र डाड)**

त्रिवेणी से कावड़ यात्रा हरणीमहादेव शिव मित्र मंडल कावड़ यात्रा के20 सदस्य दुर्गेश सिंह बबलू गाडरी सचिन जाट विनोद गाडरी शंकर जाट गोपाल गाडरीसुबह त्रिवेणी धाम से मांह्य आरती व प्रसाद वितरण करने बाद जय शिव भोले हर-हर महादेव केघोष के साथ रवाना हो हुई रास्ते में कई जगह उनका स्वागत हुआ बरुदंनी मेउनका दुपट्टा माला पहनकर कावड़ यात्रा के भक्तों का स्वागत किया इसमें भेरूलाल गाडरी शिव प्रकाश भट्ट भूपेन्द्र गट्टाणी शकर खटिक शैतान मीणा बाबूलाल प्रजापत घनश्याम प्रजापत कालूराम खटीक लादु टेलर प्रसाद राम हरिजन आदि नेस्वागत किया

# श्रेया कुमावत ने रामनिवास धाम में किया वृक्षारोपण, दिया हरियाली का संदेश

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

**शाहपुरा राजेन्द्र खटीक।**

शाहपुरा-पर्यावरण संरक्षण की दिशा में लगातार कार्य कर रही ग्रीन लिटिल बेबी नाम से प्रशिद्ध श्रेया कुमावत ने रामनिवास धाम परिसर में वृक्षारोपण कर एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया।उन्होंने औषधीय, फलदार और छायादार पौधे लगाकर स्थानीय लोगों को प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी निभाने का संदेश दिया।2025 तक श्रेया कुमावत ने पर्यावरण क्षेत्र मे सराहनीय कार्य कर अनेक रिकार्ड बनाये सार्वजनिक ओर सुरक्षित क्षेत्र में अब तक 2100 पौधों का वृक्षारोपण कर हरियाली को बढ़ावा दिया,1.25 लाख लोगो को अभियान के माध्यम,पुरे भारत मे प्रकति के प्रति जागरूक किया,25000 पौधे स्वम तैयार कर लोगो को निशुल्क वितरण चुकी,2000 कॉम्बो सीड पार्सल एक दर्जन राज्यों मे निशुल्क देकर घरों मे हरियाली किया,25000 सीड बॉल वितरण का लक्ष्य* अब तक कई वनस्पतियों की सीड बॉल बनाकर सरकारी ओर गैर सरकारी संस्थानों मे वितरण कर चुकी।श्रेया की यह पहल न केवल हरियाली बढ़ाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है, बल्की देश की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोतहै।श्रेया की यह हरित पहल छोटे-छोटे प्रयास भी प्रकृति संरक्षण की बड़ी मुहिम बन सकते हैं।

## हर दिन नए नाम की चर्चा!

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव नहीं हो पा रहा है और दूसरी ओर हर दिन अध्यक्ष पद की रेस में नए नाम जुड़ जा रहा हैं। पता नहीं इन नामों की चर्चा गंभीर है या यूं ही मामले को टालने के लिए नए नए नाम उछाले जा रहे हैं? पिछले कुछ दिनों से अध्यक्ष पद की रेस में जो नया नाम शामिल हुआ है वह मध्य प्रदेश के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और पार्टी के सांसद वीडी शर्मा का है। कहा जा रहा है कि वे संघ के बहुत पुराने स्वंयसेवक रहे हैं और भाजपा अध्यक्ष के तौर पर मध्य प्रदेश में उन्होंने बहुत अच्छा काम किया था। उन्हीं के अध्यक्ष रहते 2023 में मध्य प्रदेश में भाजपा ने ऐतिहासिक जनादेश हासिल किया। उनको संघ और भाजपा के शीर्ष नेतृत्व यानी नरेंद्र मोदी और अमित शाह का सहमति का उम्मीदवार बताया जा रहा है। अगर वे बनते हैं तो अगड़ी जाति का ही राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने की पिछले 20 साल की परंपरा भी कायम रह जाएगी। इसी वजह से जम्मू कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा के नाम की भी चर्चा चल रही थी। हालांकि अभी उनके नाम की चर्चा थम गई है। वीडी शर्मा का नया नाम आया है लेकिन तीन नामों की चर्चा काफी समय से चल रही है। ये तीनों केंद्रीय मंत्री हैं। धर्मेंद्र प्रधान, भूपेंद्र यादव और मनोहर लाल खट्टर। दो ओबीसी नेता और एक पंजाबी। इनके अलावा बीच बीच में राजनाथ सिंह के नाम की भी चर्चा हो जाती है। कहा जाता है कि जब किसी पर सहमति नहीं बनेगी तो अंत में राजनाथ सिंह को ही फिर से कमान सौंप दी जाएगी। आखिर हर मुश्किल के समय वे अध्यक्ष बने हैं। लालकृष्ण आडवाणी का जिन्ना विवाद हुआ तो राजनाथ सिंह अध्यक्ष बने और नितिन गडकरी से जुड़ी कंपनियों पर छापेमारी के बाद उनको दूसरे कार्यकाल से रोका गया तब भी राजनाथ सिंह अध्यक्ष बने। अब संघ व भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की असहमति के बीच नया अध्यक्ष चुनने की बात हो रही है तब भी उनका नाम बार बार चर्चा में आ रहा है। किसी महिला को भी राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने की बात गाहे बगाहे होती रहती है और जब ऐसी बात होती है तो निर्मला सीतारमण का नाम आ जाता है। हालांकि हो सकता है कि इन सारे नामों से इतर कोई बिल्कुल चौंकाना वाला नाम सामने आ जाए।

## हिंदी में मेडिकल की पढ़ाई का विफल अभियान

हिंदी को लेकर अलग अलग कारणों से देश के अनेक राज्यों में नफरत बढ़ रही है। भाषा के आधार पर जिन राज्यों का गठन हुआ है वहां तो हिंदी लगभग अछूत हो ही गई है लेकिन जो हिंदी भाषी राज्य हैं वहां भी हिंदी से रोजगार की संभावना मजदूरी में है या फिर राजनीति में। उच्च शिक्षा और खास कर तकनीकी शिक्षा के लिए माध्यम भाषा के तौर पर हिंदी वाले ही हिंदी को नहीं अपना रहे हैं। भले अपनी राजनीति चमकाने के लिए ही किया हो लेकिन केंद्र सरकार ने तीन साल पहले अक्टूबर 2022 में मेडिकल की पढ़ाई हिंदी भाषा में कराने का ऐलान किया था। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 12 अक्टूबर 2022 को इसकी शुरुआत की थी। लेकिन कहीं भी मेडिकल के छात्र हिंदी में परीक्षा नहीं दे रहे हैं। मध्य प्रदेश में पिछले तीन साल में किसी भी सेमेस्टर में हिंदी में किसी छात्र ने परीक्षा नहीं दी है। मध्य प्रदेश में हिंदी में मेडिकल की पढ़ाई के लिए 10 करोड़ रुपए खर्च करके किताबें छपवाई गई थीं। तब शिवराज सिंह चौहान राज्य के मुख्यमंत्री थे और उन्होंने इस पर बड़ा जोर दिया था। लेकिन मुश्किल यह है कि कॉलेजों में पढ़ाई के तरीकों में कोई बदलाव नहीं आया। पढ़ाई की माध्यम भाषा अंग्रेजी बनी रही फिर कैसे कोई छात्र हिंदी में परीक्षा देगा? सो, हिंदी में मेडिकल की पढ़ाई का प्रयास अभी तक असफल दिख रहा है। यही हाल हिंदी में इंजीनियरिंग की पढ़ाई का भी है। जब तक प्रारंभिक व माध्यमिक शिक्षा की माध्यम भाषा के तौर पर हिंदी को नहीं अपनाया जाएगा और प्रतियोगिता परीक्षाओं में हिंदी भाषी छात्र उतीर्ण नहीं होंगे तब तक तकनीकी शिक्षा की माध्यम भाषा हिंदी नहीं हो सकती है।

# झूठी कहानियों का सहारा कब तक!

"भारत दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश है और साथ ही सबसे ज्यादा विषम भी। हमारे ताजा पेपर (शोध पत्र) के मुताबिक पिछले एक दशक में आबादी के टॉप एक फीसदी हिस्से का धन तेजी से बढ़ा है, जबकि नीचे की आधी आबादी का हिस्सा बेहद कम बना हुआ है। अच्छे दिन आए हैं, लेकिन अधिकांशतः ऐसा धनी लोगों के लिए ही हुआ है।"।।।।"(नरेंद्र) मोदी ने भारत में गैर-बराबरी बढ़ने की रफ्तार तेज कर दी है। साथ ही उन्होंने लोकतांत्रिक पड़ताल के लिए आवश्यक डेटा को खत्म कर दिया है। अब हम फिर से टुकड़ों को जोड़ कर ये कहानी सामने रख रहे हैं।"भारत के मेनस्ट्रीम मीडिया ने हाल के वर्षों में वैसे भी कम बदनामियां नहीं कमाई हैं, लेकिन इस क्रम में एक नया अध्याय जुड़ा, जब भारत में गरीबी और गैर-बराबरी से संबंधित विश्व बैंक की एक संक्षिप्त रिपोर्ट के निष्कर्षों को लगभग हर बड़े अखबार ने संदर्भ से काट कर मोटी सुर्खियों के साथ छापा। हजारों करोड़ रुपये का कारोबार करने वाले और सैकड़ों कर्मचारियों के साथ काम करने वाले इन अखबारों ने प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (पीआईबी) की विज्ञप्ति से प्राप्त हुई सूचना को हू-ब-हू छाप दिया। किसी एक एक अखबार के संपादकीय विभाग में संभवतः ये सवाल नहीं उठा कि जिस दौर में हर गंभीर अध्ययन भारत में बढ़ती आर्थिक गैर-बराबरी में रिकॉर्ड बढ़ोतरी के निष्कर्ष पर पहुंचा है, तो विश्व बैंक बिल्कुल उसके बिल्कुल उलट कहानी कैसे बता सकता है! ये प्रतिनिधि सुर्खियां हैं। मीडिया के व्यापक रूप से फैले हुए दायरे में बीते छह और सात जुलाई को इसी लाइन पर हेडलाइन्स दिखीं। अब आइए, हकीकत पर गौर करते हैं। यानी इस पर ध्यान देते हैं कि विश्व बैंक ने आखिर कहा क्या थाः "भारत में उपभोग आधारित जिनी इंडेक्स 2011-12 के 28।8 से बेहतर होकर 2022-23 में 25।5 हो गया, हालांकि यह संभव है कि आंकड़ों से संबंधित सीमाओं के कारण यहां गैर-बराबरी का आकलन कम हो पाया हो। वर्ल्ड इनइक्वालिटी डेटाबेस से इसके विपरीत तस्वीर उभरती है। इसके मुताबिक जिनी इंडेक्स पर (भारत में) 2004 में आय विषमता 52 थी, जो 2023 में 62 पर पहुंच गई। वेतन संबंधी गैर-बराबरी की दर ऊंची बनी हुई है। टॉप 10 फीसदी आदमनी की औसत आय निम्नतम 10 प्रतिशत आबादी की तुलना में 13 गुना ज्यादा है।" यह पूरा पैराग्राफ पढ़ा जाए, तो क्या उपरोक्त हेडलाइन्स का किसी भी कोण से तनिक भी औचित्य बनता है? बेशक, उपरोक्त पैराग्राफ में उपभोग गैर-बराबरी में गिरावट की बात कही गई है, मगर साथ ही "आंकड़ों से संबंधित सीमाओं" को लेकर आगाह भी कर दिया गया है। विश्व बैंक ने भारत में आय संबंधी गैर-बराबरी बढ़ने का उल्लेख किया है, हालांकि इसमें धन संबंधी गैर-बराबरी की कोई चर्चा नहीं हुई है। विश्व बैंक ने वर्ल्ड इनइक्वालिटी डेटाबेस का उल्लेख किया है। ये डेटाबेस मशहूर अर्थशास्त्री थॉमस पिकेटी और उनके सहयोगियों ने स्थापित किया है। पिकेटी और उनके साथियों ने वर्ल्ड इनइक्वालिटी लैब नाम की संस्था पेरिस में बनाई है। इस संस्था ने पिछले साल लोकसभा चुनाव से ठीक पहले भारत के बारे में एक विशेष रिपोर्ट जारी की थी। रिपोर्ट फ्रांस के मशहूर अर्थशास्त्री लुकस चांसेल ने तैयार की। उसमें उन्होंने कहा थाः "भारत दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश है और साथ ही सबसे ज्यादा विषम भी। हमारे ताजा पेपर (शोध पत्र) के मुताबिक पिछले एक दशक में आबादी के टॉप एक फीसदी हिस्से का धन तेजी से बढ़ा है, जबकि नीचे की आधी आबादी का हिस्सा बेहद कम बना हुआ है। अच्छे दिन आए हैं, लेकिन अधिकांशतः ऐसा धनी लोगों के लिए ही हुआ है।" "हमारे ताजा पेपर के मुताबिक टॉप की एक फीसदी आबादी का धन रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। दरअसल, अरबपति राज का आगमन हो चुका है।" "(नरेंद्र) मोदी ने भारत में गैर-बराबरी बढ़ने की रफ्तार तेज कर दी है। साथ ही उन्होंने लोकतांत्रिक पड़ताल के लिए आवश्यक डेटा को खत्म कर दिया है। अब हम फिर से टुकड़ों को जोड़ कर ये कहानी सामने रख रहे हैं।" धन संकेंद्रण के लिहाज से 2014-15 और 2022-23 के बीच गैर-बराबरी में हुई वृद्धि खास ध्यान खींचती है। 2022-23 तक देश की कुल आमदनी और धन का क्रमशः 22।6 प्रतिशत और 40।1 प्रतिशत हिस्सा टॉप एक फीसदी आबादी के हिस्से में चला गया। सबसे धनी एक फीसदी आबादी के पास देश की आय एवं धन के संकेद्रण का यह सबसे ऊंचा स्तर है। भारत दुनिया के उन देशों में पहुंच गया है, जहां टॉप एक फीसदी आबादी की आमदनी का स्तर सबसे ऊंचा है। इस मामले में भारत ने दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील और अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है। (यानी भारत में उन देशों की तुलना में भी अधिक गैर-बराबरी हो चुकी है।) शोध पत्र में इस बात पर जोर दिया गया कि भारत में आर्थिक डेटा की गुणवत्ता खराब है। इसमें हाल के वर्षों में और गिरावट आई है। पत्र में कहा गया- "अतः यह संभव है कि ये नए अनुमान गैर-बराबरी की स्थिति को उससे कहीं कम बता रहे हों, जितनी यह असल में है।" अभी हाल में अर्थशास्त्री सुरभि केसर ने लिखा कि 1990 के दशक से भारत में गैर-बराबरी लगातार बढ़ रही है, जिससे यह दुनिया के सबसे विषम देशों में पहुंच गया है। उन्होंने 2019 में आय जिनी इंडेक्स पर भारत की स्थिति का जिक्र करते हुए कहा कि इसके आधार पर 216 देशों की सूची में भारत 176वें नंबर पर था। जबकि 2009 में इस इंडेक्स पर भारत 115वें स्थान पर था। जहां तक धन (wealth) विषमता की बात है कि जिनी इंडेक्स पर 2023 में भारत 75वें स्थान था, जो 2019 की तुलना में एक पायदान नीचे है। जिनी को-इफिशिएंट गैर-बराबरी मापने का एक सूचकांक है। जिनी इंडेक्स को कोराडो जिनी (Corrado Gini) नामक इतालवी सांख्यिकीविद् और समाजशास्त्री ने विकसित किया था। उन्होंने इसे 1912 में प्रकाशित अपने शोध में इसे प्रस्तुत किया। बाद में विभिन्न समाजों में गैर-बराबरी को मापने का यह एक सामान्य मानदंड बन गया। इसमें 0 और 1 के पैमाने पर देखा जाता है कि किसी समाज में धन या आय किन तबकों के हाथ में जा रहा है। 0 पूर्ण समानता का सूचक है, जबकि 1 पूर्ण असमानता का। यानी इस पैमाने पर जितने अधिक अंक मिलें, उस समाज में उतनी अधिक गैर-बराबरी होगी। इस सिलसिले में सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा विश्वसनीय आंकड़ों की मौजूदगी है। भारत में आंकड़ों को गढ़ने और सुविधाजनक आंकड़ों को चुनने का ऐसा चलन गुजरे 11 साल में चला है कि आज सरकारी आंकड़ों के आधार पर असल सूरत पर रोशनी डाल पाना बेहद कठिन हो चुका है। इसके अलावा गरीबी या गैर-बराबरी मापने के पैमानों को बदल देना एक आम चलन बना दिया गया है। जाहिर है, इन सबके पीछे मकसद यथार्थ के विपरीत अच्छी तस्वीर उभारना होता है। अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं, जिनमें संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों के अलावा विश्व बैंक और आईएमएफ आदि भी शामिल हैं, अपनी रिपोर्ट्स का आधार सरकारी आंकड़ों को ही बनाती हैं। यानी अगर आंकड़ों का स्रोत ही विवादास्पद हो, तो उन एजेंसियों की रिपोर्ट से भी वैसी ही तस्वीर सामने आएगी। तो अब उन संस्थाओं को अपनी साख की चिंता सताने लगी है। नतीजतन, भारत से संबंधित अपनी रिपोर्ट के साथ-साथ उचित स्पष्टीकरण एवं चेतावनी जारी करना भी वे जरूरी समझने लगी हैं। अभी हाल में चरम गरीबी की अवस्था में जी रही आबादी के बारे में एक रिपोर्ट आई, जिसके आधार पर मेनस्ट्रीम मीडिया में खबर छपी कि भारत में अब सिर्फ 5।3 प्रतिशत आबादी इस अवस्था में है, जबकि 2011-12 में 27।1 फीसदी आबादी चरम गरीबी की अवस्था में जी रही थी।\ विश्व बैंक के प्रवक्ता ने कहा कि एक चौथाई भारतीय आज भी सामान्य जीवन स्तर के लिए जरूरी न्यूनतम सुविधाओं से वंचित हैं। यानी 35 करोड़ से अधिक भारतीय अपनी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। प्रवक्ता ने कहा- 'इस बात के साक्ष्य उपलब्ध हैं कि भारत में घरेलू कल्याण (household welfare) की स्थिति में सुधार हुआ है। इसके तहत बहु-आयामी गरीबी में गिरावट, सामाजिक हस्तांतरण में वृद्धि और प्रति व्यक्ति जीडीपी में बढ़ोतरी शामिल हैं। मगर उसके साथ ही यह ध्यान में रखना चाहिए कि 2022-23 के पारिवारिक सर्वे के दौरान 2011-12 की तुलना में प्रश्नावली डिजाइन एवं सर्वेक्षण विधि में कई परिवर्तन किए गए। इनकी वजह से यह संभव है कि पारिवारिक खर्च की गणना में वृद्धि हो गई हो।' गौरतलब है कि विश्व बैंक गरीबी का आकलन प्रति दिन प्रति व्यक्ति खर्च क्षमता के आधार पर ही करता है। अतः प्रवक्ता ने आंकड़ा संग्रहण की बदली विधि के प्रति आगाह किया और कहा कि इस कारण गरीबी के पुराने आंकड़ों की तुलना नए आंकड़ों से करना ठीक नहीं है। विश्व बैंक ने कहा कि चुनौती लोगों को गरीबी की बुनियादी रेखा के ऊपर लाने भर तक की नहीं है, बल्कि इस बात को पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है कि गरीबी का अर्थ क्या है? अर्थ का यह प्रश्न इस बहस में सबसे महत्त्वपूर्ण है। लेकिन भारत सरकार, शासक वर्ग और कॉरपोरेट मीडिया का सारा प्रयास ही यह है कि चर्चा इस बिंदु तक ना पहुंचे। इसलिए कि चर्चा वहां पहुंची, तो यह साफ होगा कि गरीबी के मोर्चे पर प्रगति दिखाने के लिए किस तरह की हेरफेर की गई है। गरीबी मापने का मूलभूत पैमाना प्रति दिन कैलोरी ग्रहण कर सकने की क्षमता था। इस पैमाने पर असल कहानी अवनति की है। इस बारे में अनेक अध्ययन मौजूद हैं कि नव-उदारवादी दौर में जन मानस के बीच निजीकरण- उदारीकरण और भूमंडलीकरण की नीतियों का औचित्य साबित करने के प्रयास में कैसे Washington Consensus (वॉशिंगटन आम सहमति) से जुड़ी संस्थाओं (विश्व बैंक, आईएमएफ, डब्लूटीओ, आदि) ने प्रगति एवं विकास के नए पैमाने दुनिया में फैलाए। इसके पहले पूंजीवादी विकास प्रक्रिया का औचित्य ठहराने के लिए उन्होंने ही (तब डब्लूटीओ नहीं था) खुशहाल मध्य वर्ग की नई धारणा दुनिया में फैलाई थी। बहरहाल, अब वो दौर आ गया है, जब इन पैमानों पर भी प्रगति या विकास को चिह्नित कर पाना कठिन होता जा रहा है। यही कारण है कि इस दौर में खुद Washington Consensus से जुड़ी संस्थाओं को भारत जैसे देश के आंकड़ों को लेकर आगाह करना पड़ रहा है। मगर ये चेतावनियां आम लोगों तक नहीं पहुंचती। प्रचारित वो हेडलाइन्स होती हैं, जिन्हें उन संस्थाओं की रिपोर्टों में शामिल सरकारी आंकड़ों के आधार पर तैयार किया जाता है। वे हेडलाइन्स समाज के एक हिस्से में यह आश्वासन भरती हैं कि सब कुछ ठीक दिशा में चल रहा है। ये मोटे तौर पर समाज का वह हिस्सा है, जो पढ़ा-लिखा है, और जिसकी आवाज सुनी जाती है। बाकी विशाल आबादी उन पीड़ित तबकों की है, जिनके ऊपर गरीबी, बेरोजगारी और गैर-बराबरी की मार तेज होती चली गई है। लेकिन इन तबकों के पास वर्गीय चेतना और अपनी बात को कह सकने के मंचों का अभाव है। फिलहाल ऐसी राजनीतिक ताकतों की भी लगभग पूरी अनुपस्थिति है, जो वंचित तबकों की आवाज को संगठित करते थे। ये ताकतें आज पूरी तरह से जाति, धर्म और अन्य सांस्कृतिक प्रश्नों में उलझ चुकी हैं। इसीलिए ये शक्तियां शासक वर्ग की तरफ से आंकड़ों को तोड़-मरोड़ कर पेश किए जाने वाले नैरेटिव्स का मुकाबला करने में अक्षम हो गई हैं। जबकि ना तो ठोस अध्ययनों पर आधारित आंकड़ों की कमी है, ना ही रोजाना आम लोगों को हो रहे तल्ख तजुर्बों की। हर रोज का तजुर्बा K आकार की अर्थव्यवस्था (K-shaped economy) के लगातार अधिक विकराल रूप ग्रहण करने की पुष्टि करता है। अंग्रेजी के K अक्षर की ऊपरी रेखा और ऊपर जा रही है।

# भाजपा क्या अपना अध्यक्ष चुन पाएगी!

यह यक्ष प्रश्न बनता जा रहा है कि भारतीय जनता पार्टी अपना राष्ट्रीय अध्यक्ष चुन भी पाएगी या नहीं? यह सवाल कई महीनों या बरसों से पूछा जा रहा है लेकिन अभी इस सवाल की प्रासंगिकता यह है कि पार्टी में संगठन चुनाव कराने के लिए बनाई गई कमेटी के अध्यक्ष के लक्ष्मण के हवाले से खबर आ रही है कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव 15 अगस्त के बाद होगा। लक्ष्मण ने कई बातों की जानकारी दी है, जिसमें उन्होंने बताया है कि राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के लिए देश भर में 10 लाख बूथ प्रभारी नियुक्त किए जाएंगे, जिनमें से साढ़े सात लाख की नियुक्ति हो गई है। सोचें, पहले कहा जा रहा था कि आधे राज्यों में संगठन का चुनाव हो जाएगा तो राष्ट्रीय अध्यक्ष भी चुन लिया जाएगा। लेकिन जब आधे से ज्यादा राज्यों में संगठन चुनाव हो गया तो अब कहा जा रहा है कि ढाई लाख बूथ प्रभारी और नियुक्त होने हैं उसके बाद चुनाव होगा। बताया जा रहा है कि अभी 10 और राज्यों में प्रदेश अध्यक्ष चुनने की तैयारी चल रही है। इसमें उत्तर प्रदेश और गुजरात भी शामिल है। ये दोनों राज्य भाजपा का गढ़ है। गुजरात में लगातार छह बार से भाजपा विधानसभा चुनाव जीत रही है और उत्तर प्रदेश में भी लगातार दो बार भाजपा ने पूर्ण बहुमत हासिल किया है। गुजरात नरेंद्र मोदी और अमित शाह का गृह प्रदेश है तो उत्तर प्रदेश की वाराणसी सीट से मोदी सांसद हैं और गुजरात की पूर्व मुख्यमंत्री आनंदी बेन पटेल उत्तर प्रदेश की राज्यपाल हैं। फिर भी दोनों राज्यों के प्रदेश अध्यक्षों का चुनाव नहीं हो पा रहा है! बहरहाल, पिछले कुछ दिन से कहा जा रहा था कि आधे राज्यों में चुनाव हो गया है तो जुलाई में राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव हो जाएगा। लेकिन अब उसकी संभावना खत्म हो गई बताई जा रही है। 21 जुलाई से संसद का मानसून सत्र शुरू होगा, जो 21 अगस्त तक चलेगा। उसके बाद ही राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव होगा और केंद्रीय मंत्रिमंडल में अगर फेरबदल होनी है तो वह भी होगी। अब सवाल है कि भाजपा क्यों नहीं राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव करा पा रही है? क्या जेपी नड्डा के साथ मोदी और शाह इतने सहज हो गए हैं कि उनको बदलने का मन नहीं हो रहा है या कोई नड्डा जैसा नहीं मिल रहा है या सचमुच संघ के साथ भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की सहमति नहीं बन पा रही है? ध्यान रहे नड्डा को राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हुए साढ़े पांच साल हो गए हैं। 2014 के लोकसभा चुनाव के तुरंत बाद तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह केंद्रीय गृह मंत्री बने थे और उनकी जगह अमित शाह को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया था। 2019 का लोकसभा चुनाव उनके नेतृत्व में लड़ा गया और उसके बाद वे केंद्रीय गृह मंत्री बने। लेकिन अगले सात महीने तक वे अध्यक्ष भी बने रहे क्योंकि 2019 के अंत में कई राज्यों के चुनाव थे। 2020 की जनवरी में जेपी नड्डा राष्ट्रीय अध्यक्ष बने, जिनका कार्यकाल जनवरी 2023 में समाप्त हो गया। उसी समय उनको दूसरा कार्यकाल देने की बजाय उनके कार्यकाल का विस्तार किया जाता रहा और वे ढाई साल से तदर्थ व्यवस्था में अध्यक्ष बने हुए हैं।

## पूर्व मुख्य न्यायाधीशों का नया ठिकाना!

भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारी इन दिनों रिटायर नहीं होते हैं। उनके लिए पहले से सेवा विस्तार की योजना तैयार रहती है। ग्रेट इंडियन एक्सटेंशन प्लान के तहत वे रिटायर ही नहीं होते हैं और अगर रिटायर हो जाते हैं तो कहीं न कहीं उनका अच्छा इंतजाम हो जाता है। हाल ही में केंद्रीय गृह सचिव को एक साल का सेवा विस्तार मिला है। पहले सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस भी रिटायर होते थे तो उनको कहीं अच्छी जगह मिलती थी। लेकिन अब तो राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष का पद भी उनसे दूर हो गया है। पहले वहां रिटायर चीफ जस्टिस ही नियुक्त होते थे। जस्टिस अरुण मिश्रा से यह परंपरा टूटी और अब तक राजनीतिक नियुक्ति होने लगी है। तभी पूर्व मुख्य न्यायाधीशों का नया ठिकाना बने हैं नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी। अभी हाल में रिटायर हुए दो पूर्व मुख्य न्यायाधीश दो नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी में प्राध्यापक बने हैं। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस पद से रिटायर हुए जस्टिस संजीव खन्ना अब नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी हिमाचल प्रदेश में कानून के छात्रों को पढ़ाएंगे। उनसे पहले रिटायर हुए चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ के नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी दिल्ली में प्राध्यापक का पद मिला था। जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस चंद्रचूड़ दोनों विशेष प्राध्यापक नियुक्त हुए हैं।

## विपक्षी गठबंधन का विरोधाभास!

विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के अस्तित्व को लेकर पहले से सवाल उठ रहे थे। अब इसका बिखराव भी दिखने लगा है। आम आदमी पार्टी ने गठबंधन से अलग होने का ऐलान कर दिया है। और उसके बाद कांग्रेस पार्टी ने लेफ्ट को लेकर अपना विरोधाभास जाहिर कर दिया है। खुद राहुल गांधी ने सबसे बड़ी कम्युनिस्ट पार्टी सीपीएम से वैचारिक और राजनीतिक लडाई की बात कही है। इतना ही नहीं उन्होंने सीपीएम की तुलना आरएसएस से कर दी है। राहुल ने कहा है कि वे आरएसएस और सीपीएम से वैचारिक रूप से लड़ रहे हैं। इसके बाद दोनों पार्टियों के बीच जुबानी जंग छिड़ी हुई है। राहुल की बात का जवाब सीपीएम के सबसे बड़े नेता यानी उसके महासचिव एमए बेबी ने खुद दिया है। दोनों पार्टियों के बीच यह विवाद इसलिए छिड़ा है क्योंकि केरल में अगले साल विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। इसी तरह पश्चिम बंगाल में भी अगले साल विधानसभा चुनाव हैं तो तृणमूल कांग्रेस को भी कांग्रेस से दूरी बना कर ही चलना है। हालांकि दोनों पार्टियों में कैसा संबंध रहेगा इसका पता संसद के मानसून सत्र में चलेगा। बहरहाल, सीपीएम के महासचिव एमए बेबी ने राहुल गांधी की समझ पर सवाल उठाया है और कहा है कि वे सीपीएम की विचारधारा और उसकी कार्यप्रणाली को नहीं समझते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि राहुल गांधी में समझ की कमी है। सीपीएम महासचिव ने आरएसएस से लड़ाई में कांग्रेस की भूमिका पर भी सवाल उठाया है और सीपीएम को इस लड़ाई का चैंपियन बताया है। दोनों के इस झगड़े से यह चिंता भी जताई जा रही है कि कांग्रेस और सीपीएम दोनों अगर आरएसएस से लड़ने की बात करते रहेंगे तो केरल में अपने आप आरएसएस और भाजपा एक ताकत बन जाएंगा, जिसका लाभ उनको विधानसभा चुनाव में मिलेगा।

# इस मामले में क्रिस्टियानो रोनाल्डो से भी आगे निकल गए लियोनेल मेसी, फुटबॉल हिस्ट्री में कोई नहीं कर पाया ऐसा

एजेंसी नई दिल्ली

अर्जेंटीना के स्टार फुटबॉलर लियोनल मेसी इन दिनों एलएलएस (मेजर लीग सॉकर) में इंटर मियामी के लिए खेल रहे हैं। उनकी और पुर्तगाल के स्टार फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो की राइवलरी हमेशा से शानदार रही है। दोनों ने फुटबॉल जगत में खूब नाम कमाया है और एक दूसरे को टक्कर दी है। अब हालांकि, लियोनेल मेसी ने क्रिस्टियानो रोनाल्डो का एक बड़ा रिकॉर्ड तोड़ दिया है। मेसी के अलावा फुटबॉल के इतिहास में ऐसा किसी और ने नहीं किया है। आइये , आपको इसके बारे में विस्तार से बताते हैं। मेजर लीग सॉकर 2025 में लियोनेल मेसी की इंटर मियामी का सामना न्यूयॉर्क रेड बुल्स से था। इंटर मियामी ने इस मैच में न्यूयॉर्क को 5-1 से धूल चटाई। मेसी का भी इसमें योगदान रहा। उन्होंने 60 और 75वें मिनट पर दो गोल मारे। इसी के साथ उन्होंने इतिहास रच दिया। फुटबॉल के इतिहास में मेसी सबसे ज्यादा नोन पेनल्टी गोल करने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। बिना पेनल्टी के उनके नाम अब 764 गोल हो गए हैं। पहले यह रिकॉर्ड रोनाल्डो के नाम था, जिनके नाम 763 नोन पेनल्टी गोल थे। अल नासर के साथ रोनाल्डो ने अपना कॉन्ट्रैक्ट बढ़ाया 40 साल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो लंबे समय से सऊदी प्रो लीग में अल नासर के लिए खेल रहे हैं। लेकिन, 2025 में उनका कॉन्ट्रैक्ट एक्सपायर हो गया था। क्लब वर्ल्ड कप 2025 से पहले ऐसा स्थिति बनी हुई थी कि रोनाल्डो अल नासर के लिए फिर से साइन करेंगे या नहीं। लेकिन, रोनाल्डो ने एक बार फिर इस सऊदी प्रो लीग के क्लब के साथ कॉन्ट्रैक्ट साइन कर लिया है। रोनाल्डो ने 2 साल का यानी 2027 तक का कॉन्ट्रैक्ट अल नासर के साथ कुछ समय पहले ही साइन किया है। रोनाल्डो ने अब तक अल नासर के लिए 111 मैच खेले हैं, जिसमें उनके नाम 99 गोल हैं।

# पुर्तगाल में भारत के लांग जंप एथलीट का कमाल, टाइटल जीतकर यूं देश का नाम किया रोशन

एजेंसी नई दिल्ली

भारत के स्टार लांग जंपर मुरली श्रीशंकर ने पुर्तगाल के माइया में विश्व एथलेटिक्स उपमहाद्वीपीय टूर के कांस्य स्तर के टूर्नामेंट मीटिंग माइया सिडाडे डो डेसपोर्टो में 7 . 75 मीटर की कूद लगाकर खिताब जीत लिया। एशियाई खेलों के रजत पदक विजेता श्रीशंकर ने शनिवार की रात को दूसरे दौर में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया। उन्होंने 7.63 मीटर की कूद के साथ शुरूआत की और दूसरे दौर में 7 . 75 मीटर की कूद लगाई । तीसरी कूद में उन्होंने 7 . 69 मीटर का फासला नापा।अगला प्रयास फाउल रहा और इसके बाद 6 . 12 और 7 . 58 मीटर की कूद लगाई। पोलैंड के पियोत्र तारकोवस्की ने भी 7 . 75 मीटर की कूद लगाई लेकिन उनका दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रयास 7 . 58 मीटर था जो श्रीशंकर के 7 . 69 मीटर से कम था। विश्व एथलेटिक्स के नियमों के अनुसार अगर दो खिलाड़ियों में टाई होता है तो दूसरी वैध कूद को टाइब्रेकर माना जाता है।घुटने के आपरेशन के कारण लंबे समय खेल से दूर रहे श्रीशंकर ने इस महीने की शुरूआत में इंडियन ओपन एथलेटिक्स मीट के जरिये वापसी की है। उनकी नजरें सितंबर में तोक्यो में होने वाली विश्व चैम्पियनशिप के लिये क्वालीफाई करने पर लगी है जिसके लिये स्वतः क्वालीफिकेशन मार्क 8 . 27 मीटर है । वह 14 अगस्त तक यूरोप और मध्य एशिया में टूर्नामेंट खेलेंगे जिसके लिये सरकार ने 5 . 58 लाख रूपये मंजूर किये है।2023 में, केरल के इस एथलीट ने डायमंड लीग मीट में शीर्ष तीन में जगह बनाकर इतिहास रच दिया था। वह यह उपलब्धि हासिल करने वाले केवल तीसरे भारतीय बने। उनसे पहले सिर्फ विकास गौड़ा और नीरज चोपड़ा ही यह कमाल कर पाए थे। उन्होंने पेरिस में तीसरा स्थान हासिल किया था, लेकिन 2024 सीजन की शुरुआत में लगी चोट के कारण उनका पेरिस ओलंपिक खेलने का सपना टूट गया।

# मैं नीतीश को ड्रॉप करता और... मैनचेस्टर टेस्ट से पहले हरभजन सिंह का बयान, इस स्टार को खिलाना चाहते हैं

एजेंसी नई दिल्ली

भारत और इंग्लैंड के बीच 5 मैच की रोमांचक टेस्ट सीरीज खेली जा रही है। सीरीज का चौथा मुकाबला मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड में खेला जाएगा। 23 जुलाई से यह रोमांचक टेस्ट मैच शुरू होगा। इस सीरीज के लिहाज से यह सबसे अहम मैच होने वाला है। भारत को अगर सीरीज जीतनी है तो उन्हें हर हाल में यह मुकाबला जीतना होगा। दूसरी ओर इंग्लैंड को अगर सीरीज पर अपना कब्जा जमाना है तो उन्हें भी हर हाल में यह मैच जीतना होगा। भारत कभी इंग्लैंड से मैनचेस्टर में कोई टेस्ट मैच नहीं जीता है। अब चौथे टेस्ट के शुरू होने से पहले भारत के पूर्व स्पिनर हरभजन सिंह ने बड़ा बयान दिया है। हरभजन सिंह ने इंडिया टुडे पर बातचीत करते हुए कहा, 'मैंने लॉर्ड्स और बर्मिंघम टेस्ट से पहले भी कहा था कि कुलदीप को खेलना चाहिए। क्योंकि जिस तरह की फ्री बल्लेबाजी इंग्लैंड करती है। उनका कुलदीप को खेलना इतना आसान नहीं होगा। अगर ऐसा स्पिनर दोनों साइड स्पिन करेगा तो वह मिस्ट्री स्पिनर बन सकता है और अहम वक्त पर विकेट ले सकता है।' भज्जी ने आगे कहा, 'टेस्ट क्रिकेट में वे सिर्फ नई गेंद का इंतजार नहीं करते। कुछ ओवर हो जाने दो। अगर कुछ खास नहीं हो रहा है, तो कुलदीप यादव विकेट निकाल सकते हैं। अगर ये मेरी टीम होती, तो मैं नीतीश रेड्डी को हटाकर कुलदीप को सीधा टीम में ले आता।' 30 साल के कुलदीप यादव ने भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में 2017 में डेब्यू किया था। उसके बाद से अब तक उनको टेस्ट खेलने का मौका थोड़ा कम मिला है। यादव ने कुल 13 टेस्ट खेले हैं, जिसमें उन्होंने 56 विकेट लिए हैं। कुलदीप ने अपना आखिरी टेस्ट पिछले साल न्यूजीलैंड के खिलाफ बेंगलुरु में खेला था।

# BCCI को मिला आईसीसी से झटका, हाथ से फिसली WTC फाइनल की मेजबानी

एजेंसी नई दिल्ली

इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल की सिंगापुर में हुई बैठक में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई। इस बैठक में अगले सत्र के वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल की मेजबानी के साथ आईसीसी के एसोसिएट में दो नए देशों की एंट्री और अफगानिस्तान क्रिकेट में महिला टीम के विकास पर अहम फैसले लिए गए। इस बैठक की सबसे खास बात अगले WTC की मेजबानी को लेकर रही। पिछले तीन बार से इंग्लैंड में WTC के फाइनल का आयोजन किया जा रहा है। चौथे सत्र में भारत के अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में भी इस दौड़ में था, लेकिन मेजबानी नहीं मिल पाई। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के अगले तीन सत्र के फाइनल की मेजबानी इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट को मिली ही है। WTC 2027, 2029 और 2031 का फाइनल मुकाबला इंग्लैंड में खेला जाएगा। इससे पहले के हुए अब तक के तीन फाइनल मैच की मेजबानी भी ईसीबी ने की है। WTC की मेजबानी की रेस में बीसीसीआई भी थी, लेकिन मेजबानी नहीं मिलने से उसे एक बड़ा झटका लगा है। सिंगापुर में हुए इस बैठक में आईसीसी परिवार में दो नए सदस्य को भी शामिल किया गया। इस तरह अब आईसीसी में कुल सदस्यता 110 हो गई है। दो नए सदस्य तिमोर-लेस्ते क्रिकेट फेडरेशन और जाम्बिया क्रिकेट यूनियन है। ये दोनों देश अब औपचारिक रूप से आईसीसी के एसोसिएट सदस्य बन गए हैं। इन दोनों देशों में पिछले कुछ सालों ने रीजनल स्तर पर क्रिकेट के विकास पर बहुत ज्यादा ध्यान दिया है। ऐसे में आईसीसी की सदस्यता मिलने के बाद इन दोनों देशों में क्रिकेट अब तेजी आगे बढ़ने की उम्मीद है।

# ओल्ड ट्रैफर्ड में कौन किस पर भारी जानें भारत-इंग्लैंड के बीच टेस्ट में किसका रिकॉर्ड यहां बेहतर

एजेंसी मैनचेस्टर

भारत और इंग्लैंड के बीच पांच टेस्ट मैचों की सीरीज का चौथा मुकाबला मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड में खेला जाएगा। दोनों टीमों के बीच सीरीज में अब तक कुल तीन मैच खेले जा चुके हैं, जिसमें से इंग्लैंड ने दो में जीत हासिल कर अपनी बढ़त बनाई हुई है। ऐसे में टीम इंडिया के लिए चौथे टेस्ट मैच में हर हाल में जीत दर्ज करना जरूरी हो गया है। क्योंकि भारतीय टीम यहां जीत हासिल नहीं करती है तो फिर उसे सीरीज गंवाना पड़ जाएगा। ऐसे में एक बात यहां जानना जरूरी है कि चौथा टेस्ट मैच जहां खेला जाएगा वहां भारतीय टीम का रिकॉर्ड कैसा है। बता दें कि ओल्ड ट्रैफर्ड में भारतीय टीम को टेस्ट मुकाबले में अब तक जीत नहीं मिल पाई है। ऐसे में शुभमन गिल की अगुवाई में भारतीय टीम के सामने एक बड़ी चुनौती होगी कि वह दशकों के इंतजार को खत्म करते हुए यहां जीत हासिल करें। मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड मैदान पर टेस्ट मैचों में भारतीय टीम का रिकॉर्ड निराशाजनक रहा है। यह मैदान भारत के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं रहा है, क्योंकि 1936 में यहां अपना पहला टेस्ट मैच खेलने के बाद से भारत ने कभी भी ओल्ड ट्रैफर्ड में टेस्ट मैच नहीं जीता है। दोनों टीमों के बीच ओल्ड ट्रैफर्ड में कुल 9 टेस्ट मैच खेले गए हैं। इनमें से इंग्लैंड ने 4 मैच जीते हैं।, जबकि 5 मैच ड्रॉ पर समाप्त हुए हैं। भारत ने इस मैदान पर एक भी टेस्ट मैच नहीं जीता है। यही कारण है कि इस मैदान पर टीम इंडिया के लिए शुभमन गिल की कप्तानी में टेस्ट मैच जीतना किसी चुनौती से कम नहीं लग रही है। ओल्ड ट्रैफर्ड की पिच खासकर शुरुआत में तेज गेंदबाजों को मदद करती है। इसके अलावा मैनचेस्टर का मौसम भी उतार-चढ़ाव भरा रहता है, जिससे तेज गेंदबाजों को स्विंग और सीम का लाभ मिलता है। भारतीय टीम के बल्लेबाजों को इन परिस्थितियों में खुद को ढालने में अक्सर मुश्किल होती है। ऐसे में टीम इंडिया के बल्लेबाजों को यहां पर अपना पूरा कौशल दिखाना होगा ताकि वह मेजबान इंग्लैंड को कड़ी टक्कर दे सके।

## व्यापार

# विश्व युद्ध हारने जैसा... रूस-चीन के इस 'इंतजाम' से ट्रंप की उड़ी नींद, डॉलर के रुतबे को खतरा, भारत कहां खड़ा

एजेंसी नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिकी डॉलर का दबदबा रहा है। ग्लोबल ट्रेड में आज भी यह सबसे स्वीकार्य करेंसी है। हालांकि, अब इसके दबदबे के दर्जे पर बहस तेज हो गई है। ब्रिक्स देशों का समूह समानांतर वित्तीय प्रणाली बनाने के अपने प्रयासों को बढ़ा रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस मुद्दे पर यह कहते हुए कड़ी चेतावनी दी है कि डॉलर का आरक्षित मुद्रा का दर्जा खोना 'विश्व युद्ध हारने' जैसा होगा। उन्होंने ब्रिक्स देशों को डी-डॉलराइजेशन के प्रयासों के लिए 10% तक के आक्रामक टैरिफ लगाने की धमकी भी दी है। यह चर्चा ऐसे समय में हो रही है जब डॉलर दशकों की अपनी सबसे खराब गिरावट का सामना कर रहा है। कुछ ऊर्जा सौदे अब डॉलर के बजाय युआन या यूरो में तय किए जा रहे हैं। हालांकि, भारत का रुख अब तक डी-डॉलराइजेशन से दूरी का रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चिंता जताई है। उनकी यह चिंता अमेरिकी डॉलर के दबदबे पर घिर रहे संकट को लेकर है। उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर डॉलर का रिजर्व करेंसी का दर्जा खत्म हो जाता है तो यह 'एक विश्व युद्ध हारने जैसा' होगा। 10% तक का भारी टैक्स लगाने की धमकी ब्रिक्स देश डॉलर के विकल्प बनाने की कोशिश कर रहे हैं। ट्रंप ने कहा कि डॉलर का गिरना अमेरिका को पूरी तरह से बदल देगा। उन्होंने ब्रिक्स देशों पर 10% तक का भारी टैक्स लगाने की धमकी दी है, अगर वे डी-डॉलरीकरण को बढ़ावा देना जारी रखते हैं। ट्रंप ने ब्रिक्स को तेजी से खत्म होता एक छोटा समूह बताया है। उन्होंने डॉलर को चुनौती देने के ब्रिक्स के प्रयासों को खारिज कर दिया है। लेकिन, यह भी कहा कि ब्रिक्स पश्चिमी वित्तीय प्रणालियों को दरकिनार करने के लिए उपकरण विकसित कर रहा है। इसमें SWIFT पेमेंट नेटवर्क के विकल्प और कमोडिटी-समर्थित ब्रिक्स करेंसी पर चर्चा शामिल है। डॉलर कई दशकों में सबसे निचले स्तर पर वैसे तो अभी तक कोई करेंसी सामने नहीं आई है। लेकिन, अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में ब्रिक्स के विस्तार से डॉलर से बाहर व्यापार बढ़ रहा है। कुछ सेंट्रल बैंक अमेरिकी ट्रेजरी की होल्डिंग कम कर रहे हैं। इसके बजाय सोने का भंडार बढ़ा रहे हैं। डॉलर कई दशकों में सबसे निचले स्तर पर है। यूरो, पेसो और येन जैसी प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले यह तेजी से गिर रहा है। कुछ ऊर्जा अनुबंध अब डॉलर में नहीं, बल्कि युआन या यूरो में तय किए जा रहे हैं। कुछ साल पहले तक ऐसा बहुत कम होता था भारत का क्या है डी-डॉलराइजेशन पर रुख? हालांकि, यह समझना महत्वपूर्ण है कि डॉलर की अभी भी वैश्विक वित्तीय प्रणाली में गहराई से पैठ है। यह वैश्विक आरक्षित मुद्रा के रूप में हावी है। ज्यादातर अंतरराष्ट्रीय व्यापार डॉलर में ही होता है। भारत जैसे ब्रिक्स सदस्य भी संयुक्त मुद्रा के विचार से दूर रहे हैं। वे डी-डॉलराइजेशन के प्रति हिचकिचाहट दिखाते हैं। यह ब्रिक्स के भीतर भी पूर्ण एकमत की कमी को दर्शाता है। वित्तीय विश्लेषकों का कहना है कि डॉलर का दबदबा धीरे-धीरे कम हो रहा है। लेकिन, इसके जल्द ही खत्म होने की बात

# रूस पर नई पाबंदियों की क्या भारत चुकाएगा कीमत, 1,29,281 करोड़ पर मंडराने लगा खतरा

एजेंसी नई दिल्ली

यूरोपीय संघ (ईयू) ने रूस पर नए प्रतिबंध लगाए हैं। इससे भारत को बड़ा आर्थिक झटका लग सकता है। आर्थिक थिंक टैंक जीटीआरआई (ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव) का कहना है कि इसके चलते भारत का ईयू को 15 अरब डॉलर (लगभग 1,29,281 करोड़) का पेट्रोलियम सामान बेचना खतरे में है। असल में, ईयू अब तीसरे देशों से आने वाले उन पेट्रोलियम उत्पादों को नहीं खरीदेगा, जो रूसी कच्चे तेल से बने हैं। ईयू के 27 देशों ने यह फैसला रूस की तेल और ऊर्जा से होने वाली कमाई को कम करने के लिए लिया है। जीटीआरआई के मुताबिक, इस कदम से भारत के अलावा तुर्की और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) जैसे देशों को भी नुकसान होगा। ये देश रूस से सस्ता कच्चा तेल खरीदते थे, उसे रिफाइन करते थे और फिर डीजल, पेट्रोल और जेट ईंधन (एटीएफ) बनाकर यूरोप को बेचते थे। जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव के अनुसार, ईयू के ये नए नियम भारत जैसे देशों के लिए मुश्किल खड़ी करेंगे, जो रूसी तेल को रिफाइन कर यूरोप भेज रहे थे। ईयू के नए प्रतिबंधों से भारत का 15 अरब डॉलर का पेट्रोलियम उत्पाद निर्यात खतरे में है। जीटीआरआई के अनुसार, वित्त वर्ष 2023-24 में भारत ने ईयू को 19.2 अरब डॉलर के पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात किया था। लेकिन, 2024-25 में यह 27.1 फीसदी घटकर 15 अरब डॉलर रह गया। थिंक टैंक ने कहा कि भारत ने वित्त वर्ष 2024-25 में रूस से 50.3 अरब डॉलर का कच्चा तेल आयात किया। यह उसके कुल 143.1 अरब डॉलर के कच्चे तेल बिलों का एक तिहाई से ज्यादा है। जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा कि भारत रूस के साथ वैध व्यापार कर रहा है। लेकिन, पश्चिमी देशों में इन सौदों को लेकर राजनीतिक नजरिया बदल रहा है। जैसे-जैसे ऊर्जा संबंध गहरे होते जाएंगे, भारत को आर्थिक व्यावहारिकता और भू-राजनीतिक दबाव के बीच संतुलन बनाना होगा। ईयू के नए प्रतिबंधों का मुख्य उद्देश्य रूस की अर्थव्यवस्था को कमजोर करना है। रूस यूक्रेन युद्ध के कारण ईयू ने रूस पर कई आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं। इन प्रतिबंधों का मकसद रूस को युद्ध के लिए धन जुटाने से रोकना है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए रूस से कच्चा तेल (क्रूड) खरीदता है। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता देश है। भारत अपनी तेल जरूरतों का 85% आयात करता है। रूस भारत के लिए कच्चे तेल का एक महत्वपूर्ण सप्लायर है। ईयू के प्रतिबंधों से भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। भारत को अब ईयू को पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात करने के लिए अन्य स्रोतों से कच्चा तेल खरीदना होगा। इससे भारत की ऊर्जा लागत बढ़ सकती है। भारत सरकार ईयू के प्रतिबंधों के प्रभाव को कम करने के लिए कदम उठा रही है। इसके लिए वह अन्य देशों के साथ व्यापार संबंधों को मजबूत करने पर फोकस कर रही है। भारत सरकार घरेलू तेल उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी प्रयास कर रही है।

# अमेरिका 1, यूएई 2, चीन 3... भारत का इन देशों में बढ़ता ये ग्राफ क्या कर रहा इशारा, ड्रैगन की क्यों चढ़ेगी त्योरी

एजेंसी नई दिल्ली

वित्त वर्ष 2025-26 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) भारत के निर्यात क्षेत्र के लिए आशाजनक रही है। इसमें इलेक्ट्रॉनिक्स, रेडीमेड गारमेंट्स (RMG) और समुद्री उत्पादों में शानदार बढ़ोतरी दर्ज की गई है। वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल-जून 2025-26 तिमाही में भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र के लिए अमेरिका, यूएई और चीन शीर्ष तीन एक्सपोर्ट डेस्टिनेशन बनकर उभरे हैं। इस दौरान इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात में 47% की बढ़ोतरी हुई। यह बढ़कर 12.41 अरब डॉलर तक पहुंच गया। अमेरिका सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य बना हुआ है। इसकी हिस्सेदारी 60.17% है। रेडीमेड गारमेंट्स (RMG) के लिए भी अमेरिका सबसे बड़ा बाजार है, जहां 34.11% निर्यात होता है। समुद्री उत्पादों के निर्यात में भी 19.45% की बढ़ोतरी हुई है। इसमें अमेरिका 37.63% हिस्सेदारी के साथ सबसे बड़ा आयातक है। यह दर्शाता है कि भारत ग्लोबल व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ऐसे में जब भारत लगातार प्रमुख वैश्विक बाजारों में अपनी पैठ मजबूत कर रहा है तो दुनिया के सबसे बड़े निर्यातक चीन की भौंहें चढ़ना स्वाभाविक है। भारत का यह बढ़ता ग्राफ न केवल उसकी आर्थिक महत्वाकांक्षाओं को दर्शाता है, बल्कि वैश्विक व्यापारिक समीकरणों में संभावित बदलाव की ओर भी इशारा करता है। नीदरलैंड और जर्मनी भी भारत से इलेक्ट्रॉनिक्स सामान खरीदने वाले बड़े देश हैं। इस साल अप्रैल से जून के बीच इलेक्ट्रॉनिक्स के निर्यात में 47 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। यह बढ़कर 12.41 अरब डॉलर हो गया है। एक अधिकारी ने कहा कि यह दिखाता है कि भारत दुनिया के इलेक्ट्रॉनिक्स सप्लाई चेन में तेजी से जुड़ रहा है। भारत एशिया में एक भरोसेमंद मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में उभर रहा है। डेटा यह भी बताता है कि रेडीमेड गारमेंट्स (RMG) के लिए भी अमेरिका सबसे बड़ा एक्सपोर्ट डेस्टिनेशन है। यहां से 34.11 फीसदी शिपमेंट होते हैं। इसके बाद ब्रिटेन (8.81 फीसदी), यूएई (7.85 फीसदी), जर्मनी (5.51 फीसदी) और स्पेन (5.29 फीसदी) का नंबर आता है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक दयाराम दिव्य द्वारा मुद्रक वेदांत प्रभाकर, मेधा कम्प्यूटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, ऑफिस नं. 128, वार्ड नं. 25, नंदभवन कांवाखेड़ा पार्क के पास, भीलवाड़ा 311001 (राज.) से मुद्रित एवं एस-20, प्रतापनगर, भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित। संपादक दयाराम दिव्य 96949 57624, 87695 58132 * PRB एक्ट के तहत ख़बरों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र भीलवाड़ा होगा